



अप्राकृत वार्ता

18.11.2024

APRĀKṚTA VĀRTTĀ

MONDAY



Śrī Bṛhad-Bhāgvatāmrta 2.5.224

"Humility becomes manifest when prema reaches its ripened stage. Since the gopīs love Kṛṣṇa the most (which was shown in the Bhāgavata while they were separated from Him) they are also the most humble. In the same way prema becomes manifest when humility culminates. In this way love and humility are Each other's cause and effect."

dainyam tu paramam premnah
paripākena janyate tāsām gokula-
nārīnām
iva kṛṣṇa-viyogataḥ

दैन्यं तु परमं प्रेमणः परीपाकेण जन्यते तासां
गोकुलनारीणाम्
इव कृष्णवियोगते:



"जब प्रेम अपने परिपक्व स्तर पर पहुँचता है, तो वह विनम्रता के रूप में प्रकट होता है। गोपियाँ कृष्ण से सबसे अधिक प्रेम करती हैं (जैसा कि भागवत में उनके कृष्ण से अलग होने के समय दर्शाया गया है), इस कारण वे सबसे अधिक विनम्र भी हैं। इसी प्रकार जब विनम्रता अपनी चरम सीमा पर पहुँचती है, तो प्रेम प्रकट होता है। इस प्रकार प्रेम और विनम्रता एक-दूसरे के कारण और परिणाम हैं।"

— Adopted from Śrī Bṛhad-Bhāgvatāmrta 2.5.224 by Śrīla Sanātana Gosvāmī-Pāda

The devotee who chants the holy name offenselessly never rejects the devotional process he received from his guru nor introduces a new method, replacing the mahā-mantra with some concocted and imaginary rhyme. A vaisnava's humility cannot be doubted or challenged if he preaches the glories of the holy name and writes books, as long as he strictly adheres to the instructions of his guru. One who tries to cheat and deceive others by making a show of humility although he lacks it, just to gain cheap adoration, is not truly humble. The mahā-bhāgavata who is constantly chanting does not see the material world as something for him to exploit for personal gain, but as diverse paraphernalia for rendering service to Lord Kṛṣṇa, his associates, and devotees. He does not think that this world is his to enjoy. Although he becomes proficient in chanting he never considers giving up the mahā-mantra. He is not interested in propagating new ideas and opinions. He realizes that to regard oneself as a guru of vaisnava (devotees) strikes the death knell of his humility.

जो भक्त बिना किसी अपराध के पक्वित्र नाम का जप करता है, वह कभी भी अपने गुरु से प्राप्त भक्ति प्रक्रिया को त्यागता नहीं है और न ही किसी नई विधि का आविष्कार करके महामंत्र की जगह किसी मनगढ़त और काल्पनिक पद्य का प्रयोग करता है। यदि एक वैष्णव गुरु के निर्देशों का सख्ती से पालन करते हुए पक्वित्र नाम की महिमा का प्रचार करता है और ग्रंथ लिखता है, तो उसकी विनम्रता पर संदेह या चूनौती नहीं की जा सकती। जो व्यक्ति सच्ची विनम्रता के बिना केवल दिखावा करके लोगों से सस्ती प्रशंसा पाने की कोशिश करता है, वह वास्तव में विनम्र नहीं है। जो महाभगवत सतत जप करते हैं, वह भौतिक संसार को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए कुछ भोगने योग्य वस्तु के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे भगवान् कृष्ण, उनके पार्षदों और भक्तों की सेवा के लिए विविध सामग्रियों के रूप में देखता है। वह इस संसार को अपने उपरोग के लिए नहीं मानता। यद्योपे वह जप में निषुण हो जाता है, वह कभी भी महामंत्र को छोड़ने का विचार नहीं करता। वह नई धारणाएँ और विचार फैलाने में सच्ची नहीं रखता। वह समझता है कि स्वयं को वैष्णवों का गुरु मानना उसकी विनम्रता का अंत है।



— From Śrīla Bhaktivinoda Ṭhākura's commentary on ŚrīSikṣāṣṭakam

ŚRĪLA BHAKTIRĀKṢAKA SRĪDHARA-DEVA GOSVĀMĪ MAHĀRĀJA



*

Śrīla Guru Mahārāja: Prabhupāda has defined humility as 'that which is absent where there is a spirit of enjoyment.' Enjoying spirit, or exploitation, means aggression. There, there cannot be humility. Humility is only cent-percent Service. There is no humility in exploitation, or renunciation either. These two are opposed to the normal nature of the world. They are totally misconceived. They are enemies. They are the challenging element to the normal reality. Do you understand?

श्रील गुरु महाराजः प्रभुपाद ने विनम्रता को परिभाषित किया है
इस प्रकारः 'जहाँ आनंद उठाने की भावना होती है, वहाँ
विनम्रता अनुपस्थित रहती है।' आनंद उठाने की भावना, या
शोषण का अर्थ है आक्रामकता। वहाँ विनम्रता नहीं हो सकती।
विनम्रता केवल शत-प्रतिशत सेवा है। शोषण में विनम्रता नहीं
है, और त्याग में भी नहीं। ये दोनों संसार के सामान्य स्वभाव के
विपरीत हैं। ये पूरी तरह से गलत धारणा पर आधारित हैं। ये
शत्रु हैं। ये सामान्य वास्तविकता को चुनौती देने वाले तत्त्व हैं।
क्या आप समझ रहे हैं?

In the impartial judgment, taṭasthā-vicāra, we must find that the more humility, dainyam, we possess, the more devotion and intimacy we possess. Health depends on hunger. The more one feels hunger, the better his health may be; that is, real, natural hunger. It is something like this. And humility is to feel, 'I am the lowest.' So in this comparison, the more one has realized the Infinite, the more he thinks, 'I am the lowest.'

निष्पक्ष निर्णय, अर्थात् तटस्थ विचार (तटस्थ-विचार), में हमें यह पता चलना चाहिए कि जितनी अधिक विनम्रता (दैन्यम्) हमारे पास होगी, उतनी ही अधिक भक्ति और निकटता हमारे पास होगी। स्वास्थ्य भूख पर निर्भर करता है। जितनी अधिक भूख कोई महसूस करता है, उतना ही अच्छा उसका स्वास्थ्य हो सकता है; लेकिन वह भूख वास्तविक और स्वाभाविक होनी चाहिए। यह कुछ इसी प्रकार है और विनम्रता का अर्थ है यह महसूस करना, "मैं सबसे नीचा हूँ।" इसलिए इस तुलना में, जितना अधिक कोई अनंत को समझता है, उतना ही अधिक वह सोचता है, "मैं सबसे नीचा हूँ।"

I am humble means that I am the slave of the slave of a Vaiṣṇava. With that consciousness we must proceed. If anyone comes to molest my master, I should first sacrifice myself, thinking, "Because I am of the least importance, my sacrifice is no loss; I must sacrifice myself to maintain the dignity of my guru, the devotees, and my Lord and His family."

यह कहना कि मैं विनम्र हूँ, इसका अर्थ है कि मैं एक वैष्णव के दास का दास हूँ। इसी भावना के साथ हमें आगे बढ़ना चाहिए। यदि कोई मेरे स्वामी को कष्ट देने के लिए आए, तो मुझे पहले स्वयं को बलिदान कर देना चाहिए, यह सोचकर कि "क्योंकि मैं सबसे तुच्छ हूँ, मेरा बलिदान कोई हानि नहीं है; मुझे अपने गुरु, भक्तों, और अपने प्रभु व उनके परिवार की गरिमा बनाए रखने के लिए स्वयं को बलिदान कर देना चाहिए।"

Śrīla Guru Mahārāja: It may vary for different persons. So one has to think out his own way. Humility means 'to not encroach on the rights of others.' And also, it should not be such as to kill one's own self. It must be natural.

श्रील गुरु महाराजः यह अलग-अलग व्यक्तियों के लिए भिन्न हो सकता है। इसलिए प्रत्येक को अपने लिए स्वयं मार्ग तय करना होगा। विनम्रता का अर्थ है "दूसरों के अधिकारों पर अतिक्रमण न करना।" साथ ही, यह ऐसी भी नहीं होनी चाहिए कि अपने स्वयं के अस्तित्व को समाप्त कर दे। यह स्वाभाविक होनी चाहिए।



Feigning being a sinner and a fallen person will not make you a worthy recipient of mercy. If really, truly genuine humility comes, you will receive causeless mercy, or compassion. That is what Śrīman Mahāprabhu has expressed in the verse "na me prema gandho 'sti - I do not have even a scent of prema in Me." It would be a mistake to include something that is simply an over-sentimental predisposition to be among the eight transcendental ecstatic symptoms. That sort of thing ultimately reveals itself to be nothing more than vanity."

पापी और पतित होने का दिखावा करना आपको कृपा प्राप्त करने के योग्य नहीं बना सकता। यदि वास्तव में और सच्चे अर्थों में विनम्रता आती है, तो आपको अहैतुकी कृपा या करुणा प्राप्त होगी। यही श्रीमान महाप्रभु ने "न मे प्रेम गन्धोऽस्ति - मेरे भीतर प्रेम की गन्ध तक नहीं है" इस श्लोक में व्यक्त किया है। केवल भावुकता या अतिसंवेदनशील प्रवृत्ति को आठ पारमार्थिक उत्कंठा-लक्षणों में शामिल करना एक भूल होगी। इस प्रकार की बात अंततः केवल अहंकार ही सिद्ध होती है।

As much as your bhakti increases, humility will come and you will think, "I'm very low." If your bhakti has not increased, then only false ego will act. If bhakti is gradually developing, then gradually your humility, as told in slokas like 'त्रिनाद अपि सुनिचेन' will manifest. You will realize, "I really have nothing. I have no power. I really have no bhakti." At that time you will be able to realize how insignificant you are. Śrīmatī Rādhikā thinks in this way. She says,

"I actually have not even a scent of prema for Kṛṣṇa. I have not served Him. I have not even seen Him." Only She can speak like this, as this is the symptom of mahābhāva. It is very high. You should realize that you are nothing. You are a particle, and that particle can be covered at anytime by māyā. Śrīla Bhaktivinoda Ṭhākura therefore says in his Śrī Bhajana Rahasya that even if you have received niṣṭhā, you should hear from high-class devotees.

जितनी आपकी भक्ति बढ़ेगी, उतनी ही विनम्रता आएगी, और आप सोचेंगे, "मैं बहुत निम्र हूं।" यदि आपकी भक्ति नहीं बढ़ी है, तो केवल झूठा अहंकार ही कार्य करेगा।

यदि भक्ति धीरे-धीरे विकसित हो रही है, तो धीरे-धीरे विनम्रता, जैसा कि श्लोक 'तृणादपि सुनीचेन' में बताया गया है, प्रकट होगी। आप महसूस करेंगे, "वास्तव में मेरे पास कुछ भी नहीं है। मेरे पास कोई शक्ति नहीं है। मेरे पास वास्तव में कोई भक्ति नहीं है।" उस समय आप यह समझ पाएंगे कि आप कितने नगण्य हैं।

श्रीमती राधिकाजी इसी तरह सोचती हैं। वह कहती हैं, "वास्तव में मेरे पास कृष्ण के प्रति प्रेम की गंध भी नहीं है। मैंने उनकी सेवा नहीं की है। मैंने उन्हें देखा तक नहीं है।" केवल वही इस प्रकार कह सकती हैं, क्योंकि यह महाभाव का लक्षण है। यह बहुत उच्च स्तर की बात है। आपको यह समझना चाहिए कि आप कुछ भी नहीं हैं। आप मात्र एक कण हैं, और वह कण किसी भी समय माया द्वारा आच्छादित हो सकता है।

इसीलिए श्रील भक्तिविनोद ठाकुर अपने "श्री भजन रहस्य" में कहते हैं कि भले ही आपने निष्ठा प्राप्त कर ली हो, फिर भी आपको उच्च कोटि के भक्तों से सुनते रहना चाहिए।

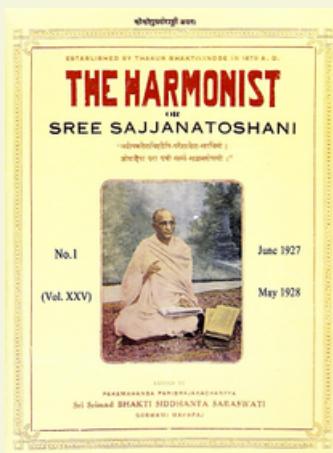
**If our ego is like the peak of a mountain, then even if the rain of divine grace falls, it will not stay there; it will flow down from the mountain. Those who are humble and meek will receive everything, while those who are arrogant will receive nothing."

"यदि हमारा अहंकार पर्वत के शिखर के समान है, तो भगवत् कृपा की वर्षा होने पर भी वहाँ नहीं रुकेगी, वह पर्वत से नीचे बह जायेगी। जो विनम्र और दीनहीन हैं वे सब कुछ प्राप्त करेंगे, जो अभिमानी हैं उन्हें कुछ नहीं मिलेगा।"

"I am not able to do anything to serve them." This sort of humility and lack of pride grants the qualification for service, and this is how haribhajana is perfected. There is no reason to doubt this. In the matter of sādhanā, hopeful conviction and enthusiasm surely grant the sādhakas and sādhikās the fruits they desire.

मैं उनके सेवा के लिए कुछ भी करने में सक्षम नहीं हूं।" इस प्रकार की विनम्रता और अभिमानहीनता सेवा के लिए योग्यता प्रदान करती है, और इसी से हरि-भजन की सिद्धि होती है। इसमें संदेह का कोई कारण नहीं है। साधना के संदर्भ में, आशापूर्ण विश्वास और उत्साह निश्चित रूप से साधकों और साधिकाओं को उनकी इच्छित फल प्रदान करते हैं।

There is no humility except the sincere disposition to submit unconditionally to the servant of the Supreme Lord. All other show of humility is hypocritical being a function of the conditioned state when we do not know the Truth. Until we know the Truth how can we avoid to be hypocritical in all our professions of duty? The proper attitude in such circumstances is the one exhibited by Śrīla Sanātana Gosvāmī Prabhu when he approached the Supreme Lord with his sincere enquiry for being enlightened *ab initio* regarding the nature of his self and his duty.



—THE HARMONIST AS IT IS VOL. 7 (VOL. XXXI, Sept. 1934 - July 1935)

Throughout his life a brāhmaṇa should consider material prestige to be like poison and dishonor to be like nectar. After all, if one learns to tolerate dishonor, then his agitation will subside and he will happily sleep, happily wake, and happily move about. The person who insults him will as a result of his sin become embarrassed, and his happiness in this and the next life will be vanquished.

ब्राह्मण को अपने जीवन भर सांसारिक प्रतिष्ठा को विष के समान मानना चाहिए और अपमान को अमृत के समान। वास्तव में, यदि कोई अपमान सहन करना सीख लेता है, तो उसका चित्त शांत हो जाता है, और वह सुखपूर्वक सोता है, सुखपूर्वक जागता है, और इस संसार में सुखपूर्वक विचरण करता है। जो व्यक्ति उसका अपमान करता है, वह अपने पाप के परिणामस्वरूप लज्जित होता है, और इस लोक तथा परलोक में उसका सुख नष्ट हो जाता है।

—Mānu-saṃhitā 2.162-163, quoted by Śrīla Prabhupāda in Brāhmaṇa and Vaiṣṇava.

सच्ची विनम्रता केवल तभी संभव है जब हम परम भगवान् के सेवक के प्रति बिना शर्त समर्पित होने की ईमानदार प्रवृत्ति रखें। विनम्रता का अन्य कोई भी प्रदर्शन पाखंड है, क्योंकि यह उस बंधनयुक्त अवस्था का परिणाम है, जब हम सत्य को नहीं जानते। जब तक हम सत्य को नहीं जानते, तब तक अपने कर्तव्यों के सभी दावों में पाखंडी होने से कैसे बच सकते हैं? ऐसे समय में उचित दृष्टिकोण वही है जो श्रील सनातन गोस्वामी प्रभु ने प्रदर्शित किया, जब उन्होंने परम भगवान् के पास जाकर अपने आत्मा और कर्तव्य के स्वभाव के बारे में शुरुआत से ही ज्ञान प्राप्त करने के लिए ईमानदारी से प्रश्न किया।



Yet if instead of chanting the holy name we do something else – if we keep our bead bag hidden inside our cloth or display artificial humility, advertising our meekness while internally maintaining a desire for name and fame, or if we want to make a show of vaiṣṇavism, even internally, or if we maintain a sense of “I” and “mine”, or if we accept non-vaiṣṇavas as vaiṣṇavas and consider vaiṣṇavas non-vaiṣṇavas, or if we commit nāmāparādhas like blaspheming saints, or if we glorify non-devotees and encourage the nāmāparādha of committing sinful activities on the strength of our chanting – certainly we will be deceived and will not attain the result.

यदि हम पवित्र नाम का जाप करने के बजाय कुछ और करते हैं—यदि हम अपनी माला की धैती को अपने कर्णे के भीतर छिपा रखते हैं या कृत्रिम विनम्रता प्रदर्शित करते हैं, अपनी दीनता का प्रदर्शन करते हैं तेकिन आंतरिक रूप से यश और प्रतिष्ठा की आकाशा बनाए रखते हैं, या यदि हम वैष्णवता का दिखावा करना चाहते हैं, चाहे वह आंतरिक रूप से ही क्यों न हो, या यदि हम “मैं” और “मेरा” का भाव बनाए रखते हैं, या यदि हम गैर-वैष्णवों को वैष्णव मान लेते हैं और वैष्णवों को गैर-वैष्णव समझते हैं, या यदि हम नामापाराध करते हैं, जैसे संतों की निंदा करना, या यदि हम गैर-भक्तों की स्तुति करते हैं और पवित्र नाम के बल पाप कर्म करने के नामापाराध को प्रोत्साहित करते हैं—तो निश्चित रूप से हमें धोखा मिलेगा और हम परिणाम प्राप्त नहीं कर पाएंगे।

—Śrī Vakṭṛtāvalī from a lecture in Mayapur on 8 November 1925



LICENSED UNDER CREATIVE COMMONS BY APRĀKṚTA VĀRTĀ



WRITE US AT:
mailto:aprakrtavartta108@gmail.com



FOLLOW US AT:
@APRAKRTAVARTTA